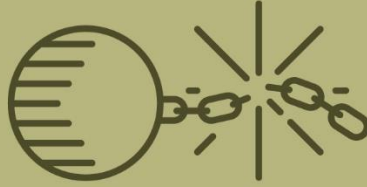




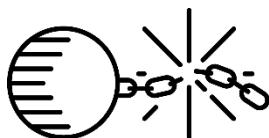
THE
MENTORING
PROJECT

ऋण-मुक्त जीवन:
वित्तीय स्वतंत्रता के लिए एक
बाइबल आधारित मार्गदर्शिका



JONH NUGIER
AND
TAYLOR HARTLEY

ऋण-मुक्त जीवन: वित्तीय
स्वतंत्रता के लिए एक बाइबल
आधारित मार्गदर्शिका



JONH NUGIER

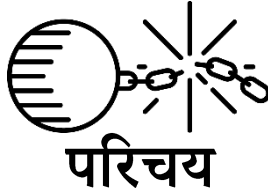
AND

TAYLOR HARTLEY

(जॉन न्यूगियर और टेलर हार्टली द्वारा)

विषय-सूची

विषय-सूची	Error! Bookmark not defined.
परिचय	4
भाग I: बाइबल भण्डारीपन के बारे में क्या कहती है?	5
भाग II: नींव	13
भाग III: धन का प्रबन्धन	18
भाग IV: वित्तीय साधन	21
निष्कर्ष	25



अधिकांश मसीही जानते हैं कि उदारता एक अच्छी बात है। किन्तु, जब बात धन की आती है, तो बहुत से मसीही सन्देह रखते हैं या डरे हुए होते हैं। आखिरकार, क्या यीशु ने नहीं कहा है कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है? (मरकुस 10:25)। जी हाँ, उसने कहा था। इसलिए, जब हम धन के विषय को छूते हैं, तो यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इसमें खतरे हैं। बहुत समय पहले एक मसीही पास्टर ने हमारे हृदयों की तुलना “मूर्तियों के कारखानों” से की—अर्थात् हम में हमेशा इसको या उसको देवता बनाने और फिर उनकी आराधना करने की प्रवृत्ति होती है।

पौलुस भी इसी विचार पर बात कर रहा था जब उसने तीमुथियुस को लिखा कि “क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है” (1 तीमुथियुस 6:10)। स्पष्टतः, पौलुस जानता था कि बहुतों के लिए धन एक पसंदीदा देवता था—उसका प्रेम अवश्य ही आपको हर प्रकार की परेशानी में डाल देगा। किन्तु ध्यान दें, पौलुस ने क्या नहीं कहा है। उसने यह नहीं कहा है कि रुपया सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। बल्कि, उसने कहा “रुपये का लोभ” सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। धन बुरा नहीं है। धन का प्रेम बुरा है। इसलिए, धन से प्रेम मत करें।

किन्तु क्या धन के बारे में बाइबल केवल इतना ही कहती है? बिल्कुल नहीं। क्या आप जानते हैं कि बाइबल में धन के विषय में 2,350 पद मिलते हैं? वास्तव में, यीशु की 40% टिप्पणियाँ धन के बारे में हैं! बाइबल में धन के विषय में जितनी सामग्री है उससे मसीही लोग बहुत से सिद्धांत सीख सकते हैं कि हम धन का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए कैसे करें। जैसा कि अपेक्षा की जानी चाहिए, जब हम धन के उपयोग के लिए परमेश्वर के मार्ग का पालन करते हैं, तब न केवल वह महिमा पाता है, बल्कि हम भी सफलता के लिए तैयार होते हैं। स्पष्ट रूप से कहें तो, सफलता का अर्थ बहुत अधिक धन होना नहीं हो सकता है। किन्तु परमेश्वर का वचन हमें अच्छे वित्तीय निर्णय लेने में सहायता करता है—ऐसे निर्णय जो समय के साथ अक्सर बन्धन की बजाय स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं। यही इस जीवन कौशल मार्गदर्शिका का विषय है—परमेश्वर की महिमा के लिए वित्तीय स्वतंत्रता का होना। प्रभु की इच्छा से, आप इस मार्गदर्शिका से यह समझ प्राप्त करेंगे कि धन क्या है, उसे परमेश्वर की महिमा के लिए कैसे उपयोग करना है, और वित्तीय स्वतंत्रता का अनुभव करने के लिए स्थापित होना।

1

बाइबल भण्डारीपन के बारे में क्या कहती है?

जब मैं बच्ची थी, तब मेरे पापा ने मुझे अपने पुराने एक पश्चिमी काउबॉय जूते में से एक दिया था। जूतों की जोड़ी नहीं—केवल एक। बात यह थी कि वह जूता छुट्टे पैसों से पूरा भरा था। उसका वज़न आराम से तीस पाउंड था! आठ वर्ष के बच्चे के लिए वह लगभग लाखों रुपये जैसा था! मुझे याद है कि मैंने कुल राशि कई बार गिनी। मैंने उसे सुरक्षित स्थान पर रखा। मैं बहुत ज्यादा उत्साहित थी। आज भी मेरे पास वह जूता है. . . परन्तु वह पैसे मेरे पास नहीं है।

आप देखें, कुछ महीनों के बाद, बच्चों का वेकेशन बाइबल स्कूल आरम्भ होने वाला था। उस वर्ष हम सिक्के इकट्ठा कर रहे थे और यह लड़के बनाम लड़कियाँ का मुकाबला था। जिसने सबसे अधिक धन इकट्ठा दिया, उसे पूरे वर्ष घमण्ड करने का अधिकार था। आठ बच्चों के एक युवा समूह में, घमण्ड का अधिकार काफी मूल्यवान था! दो रातों के VBS के बाद, हम लड़कियाँ को जितनी राशि चाहिए थी, हम उस पाने में दूर थीं। इसलिए मैंने अपनी माता से कहा, “मैं आज रात अपना जूता देने वाली हूँ।” मुझे आश्चर्य हुआ, वह खुश नहीं थी। “तुम्हारे पापा ने तुम्हें यह बचाए रखने के लिए दिया था। शायद कुछ सिक्के दे दो और बाकी बचा लो?” क्या मेरी माता मुझे कलीसिया को न देने के लिए कह रही थी? क्या यह बेहतर था कि मैं यह सब अपने पास रख लूँ?

ये बच्चों के स्तर पर वे प्रश्न हैं जो हमें यीशु के अनुयायी होने के नाते पूछने चाहिए। धन का उपयोग करने के मामले में यीशु हम से उसके अनुयायी होने के नाते क्या अपेक्षा करता है? उससे भी अधिक, मसीही लोगों को धन के बारे में कैसे सोचना चाहिए? अच्छी बात यह है कि बाइबल हमारे सिक्कों, हमारे क्रेडिट कार्ड, और उनके बीच आने वाले सारे धन के बारे में बहुत कुछ कहती है।

बाइबल इतना अधिक कहती है कि यह मार्गदर्शिका उसके सभी बिन्दु और सिद्धांत समझाने के लिए पर्याप्त नहीं है। फिर भी, मैं इस मार्गदर्शिका को भण्डारीपन के कुछ प्रमुख सिद्धांतों पर विचार करते हुए आरम्भ करना चाहता हूँ, इससे पहले कि हम यह जानें कि समझदारी से बचत और खर्च कैसे करें। क्यों? क्योंकि

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

आखिरकार मुद्दा न आपका धन है और न मेरा। मुद्दा परमेश्वर की महिमा और केवल उसी के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता का है। यदि आप इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं, तो धन का पीछा करते हुए आप निश्चित रूप से मूर्तिपूजा में गिर जाएंगे, जो आत्मिक रूप से घातक है। वित्तीय स्वतंत्रता की बजाय, आप आत्मिक कैद में होंगे। इसलिए, इससे पहले कि हम आपके धन के बारे में बात करें... आइए आपके हृदय की रक्षा के बारे में बात करें।

मैंने पवित्रशास्त्र से पच्चीस पद चुने हैं और उन्हें सात बिन्दुओं के अधीन व्यवस्थित किया है। जब आप अपने मार्गदर्शक समूह में इन पर विचार करें, तो बीच में रुकें और जाँचें कि क्या आपका जीवन धन और भण्डारीपन के बारे में परमेश्वर की शिक्षा द्वारा निर्देशित है।

पहला, मसीही लोगों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए बुलाया गया है।

“परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूँगा और न थरथराऊँगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है।” – यशायाह 12:2

“हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।” – मत्ती 6:11

“हाय उन पर जो सहायता पाने के लिये मिस्र को जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं; जो रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर क्योंकि वे अति बलवान हैं, पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज करते हैं!” – यशायाह 31:1

इन पदों में, हम सीखते हैं कि उद्धार से लेकर हम क्या खाते हैं और हम अपनी सुरक्षा कैसे रखते हैं, सब कुछ प्रभु की ओर से है। हमें अपनी हर आवश्यकता के लिए उसी पर भरोसा करना चाहिए। आखिरकार, उसने वायदा किया है कि वह हमारे जीवन की हर बात को हमारी अनन्त भलाई के लिए उपयोग करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। क्या आप इस पर सन्देह करते हैं? बस यीशु को देखें, जो परमेश्वर का अपना पुत्र था, जो उन सबके लिए फिरौती के रूप में बलिदान किया गया, जो विश्वास करते हैं। यदि परमेश्वर ने अपने पुत्र को न रख छोड़ा, तो हम कैसे सन्देह कर सकते हैं कि वह अन्य हर बात में हमारी देखभाल न करेगा?

इसका अर्थ हमारे धन के लिए क्या है? इसका अर्थ है कि हमारा धन परमेश्वर से आता है और हमें हमेशा उसी पर भरोसा करना चाहिए कि वह जो आवश्यक है उसे देगा। कभी-कभी इसका अर्थ धन होता है। परमेश्वर के प्रावधान में, इसका अर्थ हानि भी हो सकता है। दोनों स्थितियों में, हम प्रभु पर भरोसा कर सकते हैं कि वह हमें जो आवश्यक है उसे ही देगा। आखिरकार, वह हमारी आवश्यकता को हम से बेहतर जानता है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

दूसरा, मसीही लोगों को प्रभु के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए बुलाया गया है।

“जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो; क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, वहाँ किसी का पक्षपात नहीं।” – कुलुस्सियों 3:23-25

“अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।” – नीतिवचन 16:3

“मैं ने मन में कहा, “परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा,” क्योंकि उसके यहाँ एक एक विषय और एक एक काम का समय है।” – सभोपदेशक 3:17

प्रभु पर भरोसा रखना कि वह हमारी आवश्यकता को पूरी करेगा, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें कड़ी मेहनत नहीं करनी चाहिए। दरअसल, परमेश्वर नियमित रूप से हमें काम करने के लिए बुलाता है ताकि हमारी आवश्यकताएँ पूरी हों। तो यह कौन-सी बात है? परमेश्वर प्रबंध करता है या हम काम करते हैं? वास्तव में, दोनों। परमेश्वर हमारे काम के द्वारा प्रबंध करता है। “ठहरें, हो सकता है कि आप सोचें, “यदि मैं काम करता हूँ तो श्रेय परमेश्वर को क्यों?” खैर, मुझे लगता है कि आपको पता है कि आपका पूरा जीवन परमेश्वर द्वारा दिया हुआ उपहार है, है ना? यदि आपका सृष्टिकर्ता जिसने आपको दिया है, वह न होता, तो आपके पास काम में बढ़ाने के लिए हाथ भी न होता।

किन्तु एक और कारण है कि हमारी अपनी हर आवश्यकता के लिए श्रेय परमेश्वर को दिया जाना चाहिए। जैसा कि ऊपर के पदों में स्पष्ट है, परमेश्वर माँग करता है कि हम अपने काम को उसके लिए करें। इसका अर्थ है कि हम उसके लिए काम करें और संसार को उसे प्रकट करने के लिए करें। अतः, हमारा काम हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर की गवाही है जो हमें सब कुछ देता है। अगली बार जब आप ढीले पड़ जाने के लिए प्रलोभित हों, ठहरें और अपने आप से पूछें, “यदि परमेश्वर यहाँ होता तो क्या मैं ऐसा व्यवहार करता?” मिल्, परमेश्वर ने आपको सब कुछ दिया है और वह सब कुछ देखता है। जो कुछ उसने आपको दिया है उसके साथ वह अपेक्षा करता है कि आप उसका उपयोग उसकी महिमा के लिए काम करें।

तीसरा, मसीही लोग अपनी बहुतायत में से देते हैं।

“हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुछ कुछ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।” 2 कुरिन्थियों 9:7

“दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।” लूका 6:38

“कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन में उनकी उदारता बहुत बढ़ गई।” 2 कुरिन्थियों 8:2

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

“तब पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ, यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।” प्रेरितों 3:6

“जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।” - 1 पतरस 4:10

परमेश्वर ने हमें बहुत कुछ दिया है। जो बात सर्वोपरि मेरे मन में है, वह यीशु है। यीशु इस संसार के सारे धन से भी अधिक मूल्यवान है और यदि आपके पास वह है, तो मुझे विश्वास है कि आप यह जानते हैं। और इसके अलावा, यीशु के अधीन परमेश्वर ने हमें बहुत कुछ दिया है। उसने हमें जीवन दिया, हमारी कलीसियाएँ दी, हमारे परिवार दिए, हमारे मित्र दिए, उसकी सेवा करने के अवसर दिए, जीवन की बहुत-सी खुशियाँ दी और बहुत कुछ। परमेश्वर बहुत भला है।

वह उन सब के बदले में क्या माँगता है जो उसने दिया है? खैर, एक बात यह कि वह हमारी आराधना माँगता है। अर्थात्, परमेश्वर अपेक्षा करता है कि हम केवल उसी के प्रति वफादारी की शपथ लें। उस के प्रति वफादारी दिखाने का एक भाग यह है कि हमें परमेश्वर और दूसरों को उस बहुतायत में से देना चाहिए जो उसने हमें दी है। इसमें हमारा धन शामिल है परन्तु यह केवल इसी तक सीमित नहीं है। हमें उन सभी चीजों पर विचार करना चाहिए जो हमारे पास हैं—यीशु और बाकी सब—और उन्हें परमेश्वर और दूसरों को लौटाने का प्रयास करना चाहिए। आपके पास ऐसा क्या है जो आपने पाया नहीं है? कुछ नहीं। आप क्या दे सकते हैं जो इस बात की गवाही हो कि आपने सब कुछ अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता से पाया है? वही दें।

चौथा, मसीही लोग अपनी स्थानीय कलीसिया की सेवकाई का समर्थन करने के लिए देते हैं।

“अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना।” - नीतिवचन 3:9

“मैं ने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा है: ‘लेने से देना धन्य है’।” - प्रेरितों 20:35

“क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं।” - 2 कुरिन्थियों 8:12

“सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।” - मलाकी 3:10

मैं सोचता हूँ कि क्या आप कभी अपने लोकल सुपरमार्केट में कैश रजिस्टर पर खड़े होकर कैशियर को यह कहते हुए सुना है, “क्या आप स्थानीय बच्चों के हॉस्पिटल (या जो भी चैरिटी हो) के लिए 87 सेंट (या जो भी

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

रकम हो) जमा करना चाहेंगे?” हो सकता है कि आप उनके प्रश्न का दृढ़तापूर्वक “हाँ” में उत्तर देने की एक दिनचर्या भी बना लें।

सच्चाई यह है कि हम अपने धन से बहुत से अच्छे कार्य कर सकते हैं, और स्थानीय बच्चों का अस्पताल उन में से केवल एक है। और इसके बावजूद भी, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप अपनी दान-राशि का आरम्भ हमेशा अपनी स्थानीय कलीसिया को देने से करें। ऐसा करने के बहुत अधिक कारण हैं और उन सबको यहाँ बताने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, परन्तु मैं कुछ का उल्लेख कर देता हूँ। पहला, जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य आप उस धन से कर सकते हैं जिसे आप दे रहे हैं, वह शिष्य बनाना है, और यह सुसमाचार प्रचार करती हुई प्रत्येक कलीसिया की स्पष्ट ज़िम्मेदारी है। दूसरा, परमेश्वर के लोगों को देना नया और पुराना नियम दोनों में एक बाइबल आधारित स्थापित प्रथा है। तीसरा, अपनी स्थानीय कलीसिया को देख, आप अपनी आत्मिक उन्नति में निवेश करते हैं, क्योंकि उसी धन से आपकी कलीसिया अपने पास्टर को श्रेष्ठ संदेश देने के लिए वेतन देती है। चौथा, अपनी कलीसिया को देने से आपका धन आपके अन्य सदस्यों के धन के साथ मिल जाता है, जिसको परमेश्वर की महिमा के लिए बड़ी बातों में निवेश किया जा सकता है।

ये कुछ कारण हैं जिनसे आपको अपना दान अपनी कलीसिया से आरम्भ करना चाहिए।

पाँचवाँ, मसीही लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार दें।

“इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसे कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उन की बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए। ताकि तेरा दान गुप्त रहे, और तब तेरा पिता जो गुप्त में देसता है, तुझे प्रतिफल देगा।” - मत्ती 6:2-4

“अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।” - लूका 12:33-34

“कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है, परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है।” - नीतिवचन 21:26

“हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोढ़ीने, और सौफ, और जीरे का दसवाँ अंश तो देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है, चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।” - मत्ती 23:23

कैशियर के उस अनुरोध पर वापस लौटें जिसमें वह आपसे स्थानीय संस्था के लिए राशि को देने को कहता है। क्या एक मसीही को उस स्थिति में देना चाहिए? खैर, सम्भव है! यदि वह संस्था अच्छी है (1. वे कोई झूठा

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

सुसमाचार नहीं फैला रहे हों। 2. वे ईमानदारी से उन लोगों की ओर से वह कार्य कर रहे हैं जिनको आवश्यकता है), तो एक मसीही को स्वतंत्र महसूस करना चाहिए, बल्कि देने के लिए प्रेरित भी होना चाहिए। जब आप विश्वास के साथ देते हैं, तो आपकी उदारता के लिए परमेश्वर को बहुत अधिक महिमा मिलती है। इसलिए दूसरों को देने के लिए स्वतंत्र रहें चाहे वह किसी चैरिटेबल संस्था को देना हो या किसी आवश्यकता वाले व्यक्ति को देना हो।

छठा, मसीही लोग अपने बच्चों और अपने बच्चों के बच्चों के लिए एक आशीष होने की योजना बनाते हैं।

“कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।” - मत्ती 6:24

“भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मों के लिये रखी जाती है।” - नीतिवचन 13:22

“धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।” - नीतिवचन 22:7

“यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उनका हक्क देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।” - 1 तीमुथियुस 5:4

“भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मों के लिये रखी जाती है।” - नीतिवचन 13:22

यह विषय आज मसीही लोगों के बीच बहुत अधिक चर्चा में नहीं आता है, फिर भी यह बिल्कुल सत्य है। परमेश्वर आज्ञा देता है कि हम अपने बच्चों के लिए व्यवस्था करें। इसका कुछ भाग यह है कि हम उनके लिए आर्थिक सुरक्षा का प्रयास करें। मुझे आशीष मिली है कि मेरे एक दादा थे जो हमें नियमित रूप से याद दिलाते थे कि वे हमारी दीर्घकालीन सुरक्षा के लिए काम कर रहे थे। जब मैं उन्हें सुबह 6:00 बजे प्लम्बिंग ट्रक पर जाने के लिए घर से निकलते हुए देखता था, तब मुझे पता होता था कि वे मेरे लिए काम कर रहे हैं।

अच्छा अधिकार अपने अधीन रहने वालों के लिए आशीष का कारण बनता है। क्या यह वही उदाहरण नहीं है जिसे हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें दिया है? उसने हमें प्रभु यीशु को दिया और जो कुछ भी उसके अधीन है वह सब दिया! इसलिए, माता-पिता, आपको अपने बच्चों के लिए स्वयं को खर्च करना चाहिए और इसका कुछ भाग उनके लिए विरासत छोड़ने जैसा दिखना चाहिए। निःसन्देह, आर्थिक विरासत वह सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है जो आप उनके लिए करते हैं (आप उन्हें प्रभु के भय और चेतावनी में पालन -पोषण करें!), परन्तु यह महत्वपूर्ण है। इसलिए अपने काम में, उनके लिए काम करें और उन्हें बताएं कि आप इतनी मेहनत क्यों

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

कर रहे हैं। इससे उन्हें न केवल आपका प्रेम समझने में सहायता मिलेगी, बल्कि आपके उदाहरण से परमेश्वर का प्रेम भी समझने में सहायता मिलेगी।

इस मार्गदर्शिका का शेष भाग निवेश के मूल और सिद्धांतों के विषय से होकर गुजरेगा। मुझे आशा है कि वे सिद्धांत आपको अपने धन को बढ़ाने में सहायता करेंगे। किन्तु यदि इस मार्ग में आप इसे अनदेखा कर देते हैं कि धन के विषय में परमेश्वर का वचन क्या कहता है, तो आप सबसे अधिक दयानीय स्थिति के योग्य होंगे। चाहे आप 100,000,000 कमाएँ या 0, परमेश्वर का वचन आपके हृदय में सर्वप्रथम स्थान पर होना चाहिए।

सातवाँ, मसीही लोगों को ऋण के विषय में बाइबल की चेतावनियों पर ध्यान देना चाहिए।

“धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।” - नीतिवचन 22:7

“आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।” - रोमियों 13:8

“जो लोग हाथ पर हाथ मारते, और ऋणियों के उत्तरदायी होते हैं, उन में तू न होना। यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो, तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?” - नीतिवचन 22:26-27

“यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा।” - व्यवस्थाविवरण 28:12

“और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।” - मत्ती 6:12

“दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं, परन्तु धर्मा अनुग्रह करके दान देता है।” - भजन संहिता 37:21

उन परेशानियों की अनगिनत कहानियाँ बताई जा सकती हैं, जो तब आती हैं जब आप अपनी आमदनी से अधिक खर्च कर देते हैं। मुझे याद है एक बार मैं क्रेडिट कार्ड के ऋण में इतना अधिक डूब गया था कि मुझे पता नहीं था कि मैं उससे बाहर कैसे निकलूँगा। उस ऋण ने मुझे इतना चिन्तित कर दिया कि मैं रात में सोने के लिए संघर्ष करता था। और फिर भी, जैसा कि इन कुछ पदों में दिखाया गया है, बाइबल ऋण के विषय में बहुत कुछ बताती है। यदि मैंने उसकी शिक्षा पर ध्यान दिया होता, तो मैंने अपने आप को बहुत कष्ट से बचा लिया होता।

यदि आप मेरी तरह हैं, तो आप नियमित रूप से हर प्रकार की चीजों के लिए ऋण में जाने का प्रलोभन अनुभव करते हैं। सावधान रहें। परमेश्वर के वचन को सुनें। विश्वास में चलें। मुझे पता है कि यह सोचना

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

सहज नहीं लगता है कि एक प्लास्टिक कार्ड स्वाइप करना हमारे जीवन पर मसीह के प्रभुत्व का विषय है , परन्तु यदि आप रुककर इस विषय में सोचें, तो मुझे लगता है कि आप देखेंगे कि सम्भव है कि वह ऐसा ही हो। उस नये टीवी या गेम सिस्टम या खरीदारी के लिए या शहर में बढ़िया रात बिताने के लिए क्रेडिट कार्ड उपयोग करने के बाद उसे चुकाने में आपको कितना समय लगेगा? 25% क्रेडिट कार्ड ब्याज स्वीकार करना कठिन संख्या है। केवल खरीदारी पर ब्याज के रूप में आप जिस धन को चुकाने वाले हैं, उससे आप क्या कर सकते हैं? बहुत कुछ।

मेरा इरादा क्रेडिट कार्ड को लेकर लड़ाई-झगड़े करने का नहीं है। मैं आपसे यह बिल्कुल नहीं कह रहा हूँ कि आप कभी भी कपड़े, जूते, टीवी या कुछ और न खरीदें। मैं यह कह रहा हूँ कि इन निर्णयों को यीशु के प्रभुत्व के अधीन लाएँ और ऐसे निर्णय लेने का प्रयास करें जो उसे महिमा दें (जिसके लिए ऊपर दिए गए पदों जैसी शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है) और वित्तीय स्वतंत्रता को लाएँ। स्वतंत्रता के साथ, आप उदार हो सकते हैं।

चर्चा और विचार:

1. परमेश्वर के वचन में धन और भण्डारीपन के विषय में आपको क्या सबसे आश्चर्यजनक लगा?
2. धन और भण्डारीपन पर परमेश्वर के वचन को लागू करने में आपके लिए क्या सबसे कठिन है?
3. धन और भण्डारीपन पर परमेश्वर के वचन का पालन न करने के कारण आपने किन नकारात्मक परिणामों का अनुभव किया है?
4. परमेश्वर के वचन से आपको धन और भण्डारीपन के अपने दृष्टिकोण में कैसे लाभ हुआ है?

2

नींव

क्या आपको “द मेनी लक्स ऑफ़ डोबी गिल्स” नामक पुराने काले-सफेद दूरदर्शन कार्यक्रम वाला डोबी याद है? मैं उस कार्यक्रम के एक पाल को कभी नहीं भूलूँगा जिसका नाम मेनाई जी. क्रेब्स था। जब भी कोई “काम” शब्द का जिक्र करता था, तो मेनाई के पेट में तकलीफ़ होने लगती थी। किसी भी प्रकार के श्रम का नाम सुनते ही मेनाई कहता, “क-क-क-क-काम. . .” सच कहूँ तो, अधिकांश लोग अनुशासन के बारे में वैसा ही महसूस करते हैं जैसा मेनाई काम के बारे में करता था। अनुशासन कठिन है। यह उबाऊ है। यह तकलीफ़देह है। और आप जानते हैं और क्या है? अनुशासन सामान्यतः अन्य विकल्पों के लिए “न” कहने की माँग करता है जो उस समय अधिक मज़ेदार प्रतीत होते हैं।

क्या इसका अर्थ यह है कि हमें अनुशासन से बचना चाहिए? बिल्कुल नहीं। अपने आप को अनुशासित करने में असफलता दीर्घकालीन और निरंतर पीड़ा को जन्म देती है। अन्त में, आपको वही मिलता है जिसके लिए आप स्वयं को अनुशासित करते हैं। यदि आप केवल अपनी तत्काल इच्छाओं के लिए जीते हैं, तो आप उन्हीं के दास बन जाएँगे—यह विश्वास करते हुए अपने ही पीछे भागना, कि यदि आप उसे पकड़ लें, तो आपको खुशी मिल जाएगी। धन के विषय में अधिकांश लोग ऐसा ही व्यवहार करते हैं। धन तत्काल इच्छा को पूरा करने का साधन बन जाता है। कुछ धन मिला? उसे शीघ्र ही खर्च कर दो और कुछ समय के लिए खुश हो जाओ. . . कितने समय के लिए? बहुत कम समय के लिए। यदि आप धन के उपयोग में अनियंत्रित हैं, तो सम्भव है कि आप इस बात से असन्तुष्ट हों कि यह कितनी जल्दी खर्च हो जाता है और कितनी धीमी रीति से वापस आता है। आप हर तनखाह पर यह सोचते रहते हैं कि काश तनखाह हर महीने के बजाय हर दिन मिलती।

बहुत कम लोगों में इतना अनुशासन होता है कि वे धन को इस उद्देश्य से बचाएँ कि वह समय के साथ बढ़े। बचत में अनुशासन, कुल मिलाकर, आज की इच्छाओं को “न” कहने की माँग करता है ताकि आगे चलकर उदारता, सेवानिवृत्ति, और अपने बच्चों के लिए विरासत जैसी अच्छी बातों को “हाँ” कहा जा सके। आज ना कहना कभी-कभी “देरी से संतुष्टि” के रूप में संदर्भित किया जाता है। ध्यान दें कि वित्तीय अनुशासन का अर्थ संतोष न होना नहीं है बल्कि संतोष का देरी से मिलना है। निश्चित रूप से, जिसके पास अनुशासन नहीं है और जिसके पास अनुशासन है, उनके लिए संतोष की बातें समान नहीं होती हैं। जिसके पास अनुशासन नहीं है, उसके लिए संतोष का अर्थ बाहर भोजन करना, अनावश्यक विलासिता पर फालतू खर्च, और शीघ्रता से मिलने वाले सुखों पर धन व्यर्थ करना होता है। जिसके पास अनुशासन है, वह बेहतर बातों के लिए बचत करना सम्भवतः अधिक पसंद करेगा — जैसे घर, अपने बच्चों की शिक्षा, सेवानिवृत्ति, और दूसरों के भले के लिए उदारता से जीना।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

ध्यान दें कि इन सब बातों में क्या समानता है? प्रभाव। बेहतर बातों के लिए बचत करने के लिए संतोष को आगे के लिए विलम्ब करना यह दर्शाता है कि आप दूसरों के लिए सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम होंगे। क्या आप अभी वित्तीय शांति और आगे चलकर उदार बनकर दूसरों पर प्रभाव डालने का अवसर चाहते हैं? मुझे आशा है कि ऐसा होगा और आशा करता हूँ कि यह मार्गदर्शिका आपको ऐसा करने में सहायता करेगी।

यह वास्तव में कोई कठिन विज्ञान नहीं है। वित्तीय शांति पाने के कुछ मूल सिद्धांत हैं जिन्हें मैं आपके साथ बाँटना चाहता हूँ। जीवन कुछ सही चुनाव करने और उन पर टिके रहने के बारे में है। सिद्धांत कम होते हैं और वे कभी नहीं बदलते हैं; विधियाँ बहुत होती हैं और वे निरंतर बदलती रहती हैं। सिद्धांतों को खोजें।

यह तथ्य कि आप एक जीवन-कौशल मार्गदर्शिका को पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, एक अच्छा संकेत और शानदार आरम्भ है। बहुतों ने कहा है, और मैं सहमत हूँ, अगुवे पढ़ने वाले होते हैं। तो आइए हम धन और वित्तीय शांति के विषय में कुछ बातें सीखते हैं।

1. जितना कमाते हैं उससे कम खर्च करना.

बाइबल-आधारित सिद्धांत: “बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं, परन्तु मूर्ख उनको उड़ा डालता है।” (नीतिवचन 21:20, बीएसआई)

जितना आप कमाते हैं उससे कम खर्च करना वित्तीय स्थिरता की नींव है। जब आप अपनी सीमाओं के भीतर जीवन जीते हैं, तो आप ऋण के बन्धन से बचते हैं और उदारता व भविष्य की आवश्यकताओं के लिए स्थान बनाते हैं। चाहे आप कम धन कमाते हों, मध्यम कमाते हों या बहुत अधिक कमाते हों, जितना आप कमाते हैं उससे कम खर्च करें और आपको शांति और आत्मविश्वास मिलेगा और समय के साथ आप और अधिक सम्पन्न होते रहेंगे। यह एक सरल और ठोस जीवन-कौशल है।

एक अतिरिक्त टिप्पणी: केवल इसलिए कि आपकी आमदनी समय के साथ बढ़ रही है, इसका अर्थ यह नहीं कि आपका खर्च भी उसी के अनुसार बढ़ना चाहिए। आपको नियमित रूप से स्वयं से पूछना चाहिए, “क्या मुझे इसकी आवश्यकता है, या केवल इच्छा है?” हमारे लिए यह मान लेना आसान है कि क्योंकि हमारे पास अधिक है इसलिए हमें अधिक खर्च करना चाहिए। किन्तु यह हमेशा सही नहीं होता है। हमेशा अधिक खर्च करने की हमारी इच्छा अक्सर हमारे संतोष की कमी में जड़ पकड़ती है। किन्तु पौलुस ने तीमुथियुस से क्या कहा? “पर संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।” आज जो कुछ भी आपके पास है, प्रार्थना करें कि प्रभु उसमें आपको संतोष दे। आखिरकार, यदि आप संतुष्ट हैं तो कम खर्च करना और अपनी सीमाओं में रहना बहुत आसान होगा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

2. ऋण के साथ सावधान रहना.

बाइबल-आधारित चेतावनी: “धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।” (नीतिवचन 22:7, बीएसआई)

ऋण दासता में डाल देता है और परमेश्वर व दूसरों की स्वतंत्रता से सेवा करने की आपकी क्षमता को सीमित कर देता है। बाइबल हमें दूसरों के प्रति प्रेम के अलावा किसी अन्य चीज़ के प्रति कर्जदार होने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है। (रोमियों 13:8)

ऋण लेने का अर्थ है कि आप आज उपभोग कर रहे हैं और कल की मेहनत से चुकाने का वायदा कर रहे हैं। आप आज के लिए खरीद रहे हैं और भविष्य में किसी दिन लौटाने का वायदा कर रहे हैं। ऋण उठाने से शांति और आत्मविश्वास खत्म हो जाता है, क्योंकि आज के मज़े के लिए आपको हमेशा कल की मजदूरी देनी होगी। यह एक अस्थिर जीवनशैली है जिसे आत्म-नियंत्रण विकसित किए बिना दूर नहीं किया जा सकता है।

क्रेडिट कार्ड ऋण के सबसे बुरे प्रकारों में से एक हैं। इसका कारण यह है कि अधिकांश कार्ड 25% से अधिक ब्याज लेते हैं। यह बहुत अधिक ब्याज है। बहुत से लोग गवाही दे सकते हैं कि वे क्रेडिट कार्ड ऋण में सिर के ऊपर तक पहुँच गए और परिणामस्वरूप उन्हें भय और झुंझलाहट मिली। यदि आप आज क्रेडिट कार्ड ऋण से मुक्त हैं, तो उसी में बने रहें।

कठस्थ करने और हमेशा अपने दिमाग में रखने के लिए सारांश:

1. ऋण आपको वहाँ ले जाएँगा जहाँ जाने का आपने कभी इरादा नहीं किया था,
2. ऋण आपको वहाँ अधिक समय तक रोके रखेगा जहाँ आप कभी रहना नहीं चाहते थे,
3. ऋण आपसे अधिक कीमत वसूल करेगा जितना देने का आपने कभी विचार भी नहीं किया था।

3. आत्म-संयम जीवन में सीखने का प्राथमिक पाठ है।

बाइबल-आधारित बुद्धि: “जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो।” (नीतिवचन 25:28, बीएसआई)

यदि आप आत्म-संयम विकसित नहीं करते हैं, तो आपके पास जो भी धन है आप उसे व्यर्थ कर देंगे। इसका नतीजा शांति नहीं, बंधन होगा। किन्तु यदि आप अपने वित्त के विषय में आत्म-संयमी हैं, तो आप बचत करने, निवेश करने और उदारतापूर्वक जीवन जीने में सक्षम होंगे। इन अतिरिक्त लाभों पर भी विचार करें:

- निर्णय लेने में सुधार: आत्म-संयम आपको आवेगपूर्ण चुनावों से रोकता है, जिससे विचारशील और लाभप्रद निर्णय होते हैं।
- संबंधों में उन्नति: भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने के द्वारा, आत्म-संयम बेहतर संवाद को बढ़ावा देता है और विवादों को कम करता है।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

- उत्पादकता में वृद्धि: ध्यान बनाए रखने और ध्यान भटकाने वाली चीजों से बचने के द्वारा अधिक कुशलता मिलती है और लक्ष्य पूरे होते हैं।
- अच्छा स्वास्थ्य: आत्म-संयम स्वस्थ आदतों को सहारा देता है, जैसे संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम, और हानिकारक व्यवहारों से बचना।
- भावनात्मक स्थिरता: यह आपको तनाव और नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है, जिससे मानसिक दृढ़ता और कुशलता प्राप्त होती है।

4. जीवन के हर क्षेत्र के समान, वित्तीय शांति भी परमेश्वर को सृष्टिकर्ता और प्रभु पहचानने से आरम्भ होती है।

बाइबल-आधारित सिद्धांत: “मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।” (यूहन्ना 15:5, बीएसआई)

जो कुछ भी आपके पास है, वह आपको दिया गया है। क्या आप अपने माता-पिता के लिए कृतज्ञ हैं? क्या आप अपने शरीर के लिए कृतज्ञ हैं? क्या आप अपनी बुद्धि के लिए कृतज्ञ हैं? क्या आप इस बात के लिए कृतज्ञ हैं कि आपके पास आँखें, हाथ और कान हैं? जो कुछ भी आपके पास है वह परमेश्वर से आता है, और परमेश्वर आपको निरन्तर उसे पहचानने और उसका धन्यवाद करने की आज्ञा देता है, और अपने जीवन को इस प्रकार ढालने की कि आप दूसरों की सेवा करें जैसे परमेश्वर ने यीशु में आपकी सेवा की है।

5. हमें यीशु के समान सेवा करनी चाहिए।

बाइबल-आधारित सिद्धांत: यीशु का जीवन प्रकट करता है कि महानता सेवा के द्वारा आती है। क्या यह आपको अजीब लगता है? संसार को यह निश्चित रूप से अजीब लगता है। संसार स्व-उन्नति और स्व-प्रचार के बारे में है। किन्तु यीशु सेवा करने आया न कि सेवा करवाने। आपका जीवन—जिसमें आपका धन भी सम्मिलित है—सेवा के लिए होना चाहिए। अन्य बातों के साथ, इसका अर्थ दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से ऊपर रखना है (फिलिप्पियों 2:5-7)।

मेरे मसीही जीवन के आरम्भ में, यह समझना असम्भव सा लगता था कि मैं दूसरों की सेवा करके अधिक शांति, आनन्द और आत्मविश्वास पा सकता हूँ। अब 80 वर्ष की आयु में, दूसरों की सेवा करते हुए, मुझे 40 वर्षों का आनन्द, उत्साह और चुनौती प्राप्त हुई है; और इस यात्रा में प्रभु ने मेरी हर आवश्यकता पूरी की है।

चर्चा और विचार:

1. इन सुझावों में से कौन-सा आपके लिए लागू करना सबसे कठिन है? क्यों?
2. धन का संबंध परमेश्वर पर हमारे भरोसे (या उसके अभाव) से किस प्रकार है?
3. क्या कोई जानता है कि आप अपना धन कैसे खर्च करते हैं? अपने मार्गदर्शक या अपनी कलीसिया के किसी विश्वसनीय व्यक्ति के साथ यह बात साझा करें ताकि वे आपको उत्तरदायी बने रहने में सहायता कर सकें।

3

धन का प्रबन्धन

मैं अपने तीसवें वर्ष के अन्त में मसीही बना। मेरे परिवर्तन से पहले, मेरा जीवन अस्त-व्यस्त था और उसका मुख्य कारण मेरा पाप था। मेरा विवाह टूट गया था, मैंने अपने बच्चों को आघात पहुँचाया, और स्वयं को ऋण में धकेल दिया। किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं सुसमाचार को समझ पाया और अपने पाप से मन फिराया और यीशु पर भरोसा किया। शीघ्र ही उसके बाद (मैं 38 वर्ष का था), मेरी मुलाकात मेरी दूसरी पत्नी कैरल से हुई और हमने विवाह कर लिया। कैरल ने मुझे बहुत-सी बातों के विषय में सिखाया, और उनमें से एक धन के विषय में भी था।

हमारे विवाह के आरम्भ में, हम टेनेसी चले गए और वहाँ एक घर खरीदा। किन्तु हमें यह पता नहीं था कि शीघ्र ही बैंक अधिकारी हमारे द्वार पर आकर मुझे सूचित करेगा कि निवेश कर-ऋण वापसी के लिए मुझे 150,000 डॉलर (1983 में) देने हैं। उन्होंने हमारे नये घर को खरीदने पर रोक लगाई। और इससे भी बुरा यह कि मैं आकस्मिक खर्चों के द्वारा हमें निरन्तर और गहरे ऋण में धकेल रहा था। मैंने एक बार क्रेडिट पर जकूज़ी टब भी खरीद लिया! जब वह टब हमारे घर के दरवाजे पर पहुँचा, कैरल ने उसे वापस भेज दिया। उस दिन उसने मुझे बता दिया कि मुझे अपने खर्चों को नियन्त्रण में लाना होगा। उसने कहा, “यदि आप नकद भुगतान नहीं कर सकते हैं, तो आप उसे न खरीदें!” उसी दिन धन के प्रति मेरा दृष्टिकोण बदल गया। मुझे पता था कि मुझे इस जीवन-कौशल मार्गदर्शिका के भाग दो में जो सलाह मैंने बाँटी थी, उसे लागू करना आरम्भ करना होगा।

कैरल की सहायता से, मैंने ऋण चुकाने की योजना बनाई और 2-3 वर्षों में, हम ऋण-मुक्त हो गए। उस समय, कैरल ने पूछा कि सेवानिवृत्ति की तैयारी के लिए हमें कितना बचाना होगा। दो वर्षों में, हमने वह राशि बचा ली और बहुत-से अच्छे निवेशों के बाद, वह धन इतना बढ़ गया कि वह जीवन यापन के लिए पर्याप्त से भी अधिक हो गया।

लगभग पाँच वर्ष विवाह के बाद, कैरल ने निवेदन किया कि हम प्रत्येक वर्ष जमा होने वाले धन को मसीही सेवाओं के लिए दान कर दें। वह चाहती थी कि हम प्रत्येक वर्ष सारा नकद दान कर दें, ताकि हम ऐसी चीजें न जोड़ें जिनकी आवश्यकता नहीं है। कैरल दूसरों के प्रति उदार थी और मैंने उसके उदाहरण से उदारता सीखी।

पिछले 40 वर्षों में, कम से कम हमारे वार्षिक आय का 50% मसीही सेवाओं को दान किया गया है और उस समय के दौरान हम अच्छी तरह रहे हैं और बहुतों की पहुनाई कर रहे हैं। परमेश्वर अनुग्रहकारी रहा है। दुख

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

की बात है कि 63 वर्ष की आयु में कैरल प्रभु के पास घर चली गई। मैं उसके जीवन के लिए और उसने मुझे जीवन जीने के बारे में जो कुछ भी सिखाया, उसके लिए प्रभु की स्तुति करता हूँ।

80-10-10 नियम.

मुझे पता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का 50% दान नहीं कर सकता है। इसलिए मैं नियमित रूप से 80-10-10 वाले नियम की सलाह देता हूँ। ध्यान रहे, ये आँकड़े आरम्भिक सुझाव हैं। आपके हालात के अनुसार, आपको इन संख्याओं को समायोजित करने की आवश्यकता पड़ सकती है ताकि परमेश्वर ने जो कुछ आपको दिया है और जो जिम्मेदारियाँ हैं, उनका उत्तम लेखा रखा जा सके।

यह बढ़ा-चढ़ा कर कहना नहीं होगा कि 80-10-10 वाले नियम ने मेरी धन संबंधी व्यवस्था को बदल दिया। यह इस प्रकार विभाजित होता है:

- आपकी आय का पहला 10% आपके स्थानीय कलीसिया को दिया जाना चाहिए। मैं पहला इसलिए कहता हूँ क्योंकि अक्सर यह होता है कि यदि हम महीने के अन्त तक प्रतीक्षा करें, तो हम इस राशि को अपने लिए खर्च कर देते हैं, न कि उसे भरोसे सहित प्रभु को समर्पित करते हैं। प्रभु के कार्य के लिए पहला 10% देने से हम दर्शाते हैं कि वह हमारी प्राथमिकता और खजाना है। यह हमारे बच्चों और देखने वाले संसार के लिए एक गवाही है।
- आपकी आय का दूसरा 10% आपके बचत खाते या निवेश खाते में जाना चाहिए। फिर से कहूँ, यदि आप महीने के अन्त में बचत या निवेश करना चाहेंगे, तो आपके पास भुगतान के लिए पर्याप्त धन नहीं बचेगा। जितने अधिक समय तक आप इस अनुशासन के साथ जीवित रहेंगे, उतने अधिक सम्पन्न होते जाएँगे।
- बाक़ी 80% आपकी आवश्यकताओं, इच्छाओं और ऋणों के लिए होगा। आप पाएँगे कि यह स्व-नियन्त्रण आपके जीवन को बेहतर रूप से बदल देगा। आप आरम्भ में स्वयं को काबू में लाना सीखते हैं। और धीरे-धीरे निवेश करना सीखते हैं। और अन्त में आप सीखते हैं कि शांति और आत्मविश्वास खर्च करने से नहीं आता है; यह आत्म-संयम से आता है।

यह बजट बनाने का केवल एक तरीका है। आपको इन संख्याओं को बदलने या किसी अन्य रणनीति को अपनाने की आवश्यकता हो सकती है। किन्तु मैं दृढ़ता से सुझाव देता हूँ कि आप जो भी बजट चुनें, इन तीन मुख्य वर्गों को उसका हिस्सा अवश्य बनाना चाहिए। आपके लिए दान देना, बचत करना, और बुद्धिमानी से खर्च करना आवश्यक है।

सर्वोत्तम निवेश के सुझाव.

यह जीवन-कौशल मार्गदर्शिका वित्तीय स्वतंत्रता के विषय में है, न कि निवेश के विषय में। फिर भी, वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में निवेश अक्सर भूमिका निभाता है। इसलिए, यहाँ कुछ संक्षिप्त सुझाव दिए जा रहे हैं

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जिससे कि आप किस प्रकार बुद्धिमानी से उस धन को निवेश कर सकते हैं जो परमेश्वर ने आपको दिया है ताकि वह बढ़े।

- कम दाम में खरीदना सफलता की कुंजी है और इसके लिए बुद्धिमानी की आवश्यकता है। अधिकांश निवेशक महंगा खरीदते हैं और विश्वास करते हैं कि समय के साथ मूल्य बढ़ता रहेगा।
- 1980–2020 तक रियल एस्टेट और स्टॉक मार्केट लगातार ऊपर रहा और धन कमाना आसान था। पिछले 5 वर्ष उतार-चढ़ाव वाले रहे और इतने सहज नहीं थे। इसका अर्थ यह है कि यदि आप अपने निवेश की याला अभी आरम्भ कर रहे हैं, तो आपको धैर्य रखना होगा।
- दशकों के निवेश के बाद मैंने यह सीखा है कि सबसे अधिक लाभदायक निवेश वे हैं जहाँ हम किसी सम्पत्ति को “जब उसका मूल्य अत्यधिक घट चुका हो” तब खरीदते हैं, और फिर वह बढ़कर अच्छा लाभ देता है। जानी-मानी कंपनियों में मूल्य की गिरावट का अर्थ यह है कि उसमें प्रवेश करने का अच्छा अवसर है।
- अल्पकालिक दृष्टिकोण रखें। कम से कम आधा समय मार्केट से बाहर रहना जोखिम को कम करता है। फिर भी हम उत्तम वित्तीय मार्गदर्शन प्राप्त करने में निवेश करके उच्च प्रतिफल पाते हैं, और यह स्वीकार करते हैं कि बेहतर प्रतिफल प्रायः मार्केट की उथल-पुथल के साथ ही आते हैं।
- मार्केट बिक्री मूल्य तय करता है — आप नहीं। आपकी सफलता की कुंजी सही बेचने से अधिक सही खरीदना है।

स्मरण रखें कि धन का अर्थ जिम्मेदारी है। हमारे हृदय आसानी से धन को एक मूर्ति में बदलने के लिए प्रलोभित हो जाते हैं। धन बढ़ाने के विषय में जो कुछ भी मैं कह रहा हूँ, वह सुरक्षित और अनुसरण करने योग्य नहीं है यदि आप मूर्तिपूजा के विषय में बाइबल की चेतावनियों और उदारता के साथ जीवन जीने की आज्ञाओं को न सुनें और न मानें।

चर्चा और विचार:

1. क्या आपने कभी बजट बनाया है? क्या आप अभी बजट रखते हैं? बजट बनाने के कारण आपने कौन-सी चुनौतियाँ या कौन-से आनन्द अनुभव किए हैं?
2. क्या आप अपने जीवन के किसी ऐसे समय को पहचान सकते हैं जो गलत वित्तीय निर्णयों से भरा हुआ था? आपको उससे बाहर आने में क्या सहायता मिली?
3. आपके पास अपने धन के विषय में आत्म-संयम बनाये रखने के लिए कौन-सी जवाबदेही मौजूद है?

4

वित्तीय साधन

1. आपकी कलीसिया में परिपक्व विश्वासियों में कौन ऐसे हैं जो अपने वित्त के विषय में विश्वासयोग्य रहे हैं और जो आपकी सहायता करने के लिए तैयार होंगे कि आप अपने वित्त को कैसे प्रबन्धित करें ? उन्हें खोजें, और आप उन्नति करेंगे।
2. वित्तीय मार्गदर्शन का एक अतिरिक्त विकल्प रैम्ज़ी फ़ाइनेंशियल सॉल्यूशन्स है। डेव रैम्ज़ी ऋण-मुक्ति, रियल एस्टेट की खरीद/बिक्री, बजट बनाना, निवेश करना, सेवानिवृत्ति की योजना, बीमा खरीदना, कर जमा करना, और अन्य विषयों पर सहायक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
<https://www.ramseysolutions.com/money-34462>
3. उनके पास YouTube पर सैकड़ों उपयोगी वीडियो हैं जहाँ आपको जैसे लोग अपनी समस्याओं और अवसरों को साझा करते हैं, और ये प्रतिदिन बनाए जाते हैं। ईश्वरीय वित्तीय सिद्धांतों को सुनने के लिए यह उत्कृष्ट साधन है।
https://www.youtube.com/results?search_query=dave+ramsey+show

पढ़ने के लिए चार पुरानी पुस्तकें।

1. *मूवर ऑफ़ मेन एंड माउंटेन्स* – आर. जी. लेटूरनेऊ। यह पुस्तक मैंने पहली बार 1980 के दशक के अन्त में पढ़ी थी। उसके बाद भी कई बार पढ़ी है। वह भूमि-की-खुदाई की बड़ी मशीनों का निर्माता थे। मैंने अपने कार्य-जीवन का अधिकांश समय मशीनरी के क्षेत्र में बिताया है, इसलिए मुझे इस पुस्तक का शीर्षक पसंद आया और मैं इस व्यक्ति के विषय में पढ़ना चाहता था।

मूवर ऑफ़ मेन एंड माउंटेन्स आर. जी. लेटूरनेऊ की आत्मकथा है, जो एक बहुमुखी आविष्कारक, उद्योगपति और समर्पित मसीही थे, जिन्होंने भूमि-समतलीकरण उद्योग में क्रान्ति ला दी। यह पुस्तक उनके व्यक्तिगत जीवन-यात्रा, व्यावसायिक उपलब्धियों और अटल विश्वास को एक साथ पिरोती है, और उनके जीवन को इस सत्य का प्रमाण प्रस्तुत करती है कि हर कार्य में परमेश्वर के साथ सहभागिता करना कितना सामर्थ्य होता है। बातचीत-सरीखी और प्रेरणादायक शैली में लिखी गई यह पुस्तक विस्तार से बताती है कि लेटूरनेऊ ने किस प्रकार अपनी सूझ-बूझ, दृढ़ता, और अपनी आय का 90% मसीही कार्यों में देने की प्रतिबद्धता के द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाई।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

आर. जी. लेटूरनेऊ मेरे मशीनरी नायकों में से एक थे। उनके उदार जीवन ने मुझे बार-बार प्रेरित किया है कि मैं भी उसके साथ उदारता से जीऊँ जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। मैं आपको यह पुस्तक पढ़ने की सलाह देता हूँ। यदि यह नहीं, तो कोई दूसरी पुस्तक पढ़ें जो ऐसे व्यक्ति की कहानी बताए जिसने उदारता से जीवन जिया और उनके उदाहरण का अनुसरण करें।

2. *द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन* – जॉर्ज एस. क्लेसन। यह पुस्तक पढ़ने में आसान और गहन बुद्धि से भरी है। इसे पहली बार 1926 में प्रकाशित किया गया था और यह आज भी व्यक्तिगत वित्त के विषय में एक सर्वोच्च पुस्तक है, जो प्राचीन बेबीलोन में आधारित दृष्टान्तों के माध्यम से धन और धन-प्रबन्धन के कालातीत सिद्धांतों को व्यक्त करती है। इस पुस्तक की कहानियाँ अर्काद के इर्द-गिर्द घूमती हैं, जो एक समय का गरीब लेखक था, परन्तु बाद में बेबीलोन का सबसे धनी व्यक्ति बन गया, और इस पुस्तक की कहानी उन लोगों को दी गई उसकी शिक्षाओं के इर्द-गिर्द है, जो वित्तीय सफलता की खोज में थे।

पुस्तक का मुख्य संदेश इस विचार के इर्द-गिर्द घूमता है कि वित्तीय सफलता किसी भी व्यक्ति के लिए सम्भव है जो मूल सिद्धांतों को समझता है और उन्हें लागू करता है। सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है “सबसे पहले स्वयं को भुगतान करें”, जो इस बात की सलाह देता है कि प्रत्येक आय का कम से कम दस प्रतिशत बचाया जाए। यह सिद्धांत नियमित बचत के महत्व को इस रूप में बल देता है कि यही धन के निर्माण की नींव है। चाहे आप कभी धनी बनें या न बनें, बचत वित्तीय स्वतंत्रता की आवश्यक सामग्री है।

पुस्तक खर्चों पर नियन्त्रण के महत्व पर भी जोर देती है। यह तर्क देती है कि एक व्यक्ति को आवश्यक खर्चों और इच्छाओं के बीच भेद करना चाहिए और अपने खर्चों को अपनी आय के बराबर होने से रोकना चाहिए। अपने साधनों के भीतर रहकर जीवन जीना वित्तीय स्वतंत्रता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, “द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन” बुद्धिमानी से भरे निवेश के माध्यम से धन को “आपके लिए काम करने” के महत्व पर प्रकाश डालती है। यह वित्तीय विषयों में अनुभव रखने वालों से ज्ञान और सलाह लेने की सलाह देती है और उन जोखिमपूर्ण उपकरणों से बचने को कहती है जो तेज़ लाभ का वायदा करते हैं। पुस्तक चक्रवृद्धि ब्याज की शक्ति पर भी चर्चा करती है, यह दिखाते हुए कि निवेश किया गया धन समय के साथ कैसे और आय उत्पन्न कर सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण विषयों में घर का मालिक होना, निवेशों या सेवानिवृत्ति की योजना के माध्यम से भविष्य की आय सुनिश्चित करना, और अपनी कमाई की क्षमता में निरन्तर सुधार लाना भी इसमें शामिल है। यह पुस्तक अवसर की भूमिका और अवसर आने पर निर्णायक रूप से कार्य करने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालती है।

मैं *द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन* को उन सभी को पढ़ने की सलाह देता हूँ जिन्हें वित्तीय स्वतंत्रता के मूल सिद्धांत सीखने की आवश्यकता है। यह बचत, बजट, समझदारी से निवेश करने, और वित्तीय सफलता को बढ़ावा देने वाली मानसिकता विकसित करने के महत्व पर बल देती है।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका

3. *थिक एंड ग्रो रिच* - नेपोलियन हिल। यह पुस्तक पहली बार 1937 में प्रकाशित हुई थी। यह एक स्व-सहायता पुस्तक है जो व्यक्तिगत उपलब्धि के दर्शन का विवरण प्रस्तुत करती है। इसे थोड़ा सावधानी के साथ लें। मैं जानता हूँ कि बहुत से लोग “स्व-सहायता” शब्द सुनते ही चिन्तित हो जाते हैं। मैं इस पुस्तक को अंतिम और सम्पूर्ण समाधान के रूप में नहीं सुझा रहा हूँ। फिर भी, मुझे लगता है कि यह पुस्तक वित्तीय रूप से और उससे आगे भी सफल होना सीखने के लिए एक उपयोगी साधन बनी हुई है।

यह पुस्तक मनोवृत्ति की शक्ति और प्रबल इच्छा होने के महत्व पर बल देती है। हिल कहते हैं कि एक प्रज्वलित इच्छा, लक्षित आत्मविश्वास के साथ मिलकर, लोगों को उनके लक्ष्यों की ओर अग्रसर कर सकती है। इसमें लेखक “स्वतः सुझाव” की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जो बार-बार के कथनों और दृष्टिकरण द्वारा अवचेतन मन को प्रभावित करने की एक तकनीक है।

एक अन्य प्रमुख सिद्धांत जिसे हिल प्रस्तुत करते हैं, वह विशिष्ट ज्ञान है। हिल तर्क देते हैं कि धन प्राप्त करने के लिए सामान्य ज्ञान पर्याप्त नहीं है; इसके स्थान पर, लोगों को अपने चुने हुए क्षेत्र से संबंधित विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वह कल्पना की भूमिका पर भी प्रकाश डालते हैं और संश्लेषित कल्पना (मौजूद विचारों को जोड़ना) व सृजनात्मक कल्पना (नये विचार उत्पन्न करना) के बीच भेद बताते हैं।

हम जानते हैं कि इच्छाओं को वास्तविकता में बदलने के लिए संगठित योजना अत्यन्त आवश्यक होती है। हिल विस्तृत कार्य-योजना बनाने और “मुख्य लोगों” के समूह के साथ सहयोग करने के महत्व पर बल देते हैं, जो सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देता है। निर्णय-क्षमता और दृढ़ता भी अत्यन्त आवश्यक हैं; सफल व्यक्ति निर्णय जल्दी लेते हैं और उन पर टिके रहते हैं, और बाधाओं से विचलित होने से इंकार करते हैं।

अन्ततः, “थिक एंड ग्रो रिच” पुस्तक एक ऐसे ढाँचे को प्रस्तुत करती है जो सफलता-उन्मुख मानसिकता को विकसित करती है और एक व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस कदम उठाने में सक्षम बनाती है। यह इस बात पर बल देती है कि इन सिद्धांतों को समझकर और लागू करके कोई भी व्यक्ति समृद्धि और परिपूर्णता प्राप्त कर सकता है।

4. *द इंटेलिजेंट इन्वेस्टर* - बेंजामिन ग्राहम। यह पुस्तक पहली बार 1949 में प्रकाशित हुई थी। कुछ लोग इस पुस्तक को निवेश की बाइबल मान सकते हैं। *द इंटेलिजेंट इन्वेस्टर* पुस्तक एक दीर्घकालीन दर्शन प्रस्तुत करती है जो सावधानीपूर्वक विश्लेषण के द्वारा जोखिम को कम करने और लाभ को अधिकतम करने पर केन्द्रित है। कम मूल्यांकित कंपनियों में निवेश करने और सुरक्षा की एक सीमा को बनाए रखने वाले ग्राहम के सिद्धांत विवेकशील निवेशकों के लिए आज भी आधारभूत सिद्धांत बने हुए हैं।

ये पुस्तकें व्यावहारिक सलाह, मूलभूत सिद्धांतों, और धन के मनोविज्ञान पर गहरी दृष्टि का मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे उन सभी के लिए मूल्यवान साधन बन जाती हैं जो वित्त की दुनिया को प्रभावी रूप से समझना और उसमें मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं, वर्तमान में भी और भविष्य में भी।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

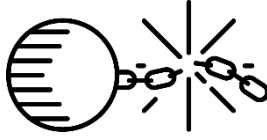
अतिरिक्त संसाधन

यदि आप बजट बनाने, बचत करने, और निवेश करने में नये हैं, तो मैं दृढ़ता से सुझाव देता हूँ कि किसी वित्तीय मार्गदर्शक को खोजें। ऐसे व्यक्ति को खोजने का सर्वोत्तम स्थान आपकी स्थानीय कलीसिया हो सकती है। सूचना के इस युग में, मसीही लोग अक्सर जीवन की अनेक समस्याओं के लिए अपनी स्थानीय कलीसियाओं के अतिरिक्त हर जगह सहायता खोजते हैं। यह एक गलती है।

चर्चा और विचार:

1. आपके जीवन में ऐसा कौन है जिससे आप अपने धन (जो आप कमाते हैं, बाँटते हैं, बचाते हैं, और खर्च करते हैं) के बारे में बात कर सकते हैं?
2. क्या आप अपनी आय, उदारता, बचत, या खर्च के बारे में बात करने में असहज महसूस करते हैं? क्यों?
3. क्या आपके माता-पिता ने धन का बुद्धिमानी से उपयोग किया? कैसे या कैसे नहीं?

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए बाइबल आधारित एक मार्गदर्शिका



निष्कर्ष

मैंने यह मार्गदर्शिका, कुछ हद तक इसलिए लिखी है ताकि आप अधिक धन कमाने के बारे में बुद्धिमानी से सोच सकें। किन्तु इसे लिखने का मुख्य कारण यह नहीं है। मैंने इसे इसलिए लिखा है ताकि आप जो भी धन कमाएँ, उसके साथ आप परमेश्वर का आदर करना और दूसरों की सेवा करना सीखें। ऐसा करने से, मेरा विश्वास है कि आप अपने जीवन को देखने वाले सभी लोगों के समक्ष यह गवाही देने के लिए सर्वश्रेष्ठ रूप से स्थापित होंगे कि परमेश्वर वही है जो वह कहता है, और वह आपकी सम्पूर्ण आराधना के योग्य है।



THE
MENTORING
PROJECT

जॉन नुगियर यीशु मसीह के एक समर्पित अनुयायी हैं और कैलिफ़ोर्निया की सेंट्रल वैली को अपना घर मानते हैं। व्यवसाय में एक सफल करियर के बाद, जॉन ने स्वयं को एक प्रभावशाली जीवन जीने और दूसरों की अनन्त भलाई में निवेश करने के लिए समर्पित कर दिया है। उनकी इच्छा है कि वे अपनी मेहनत से प्राप्त की गई बुद्धि आने वाली पीढ़ियों को सौंपें और यह देखें कि अन्य मसीही लोग भी मेंटरिंग के कार्य को अपनाएँ। यही द मेंटरिंग प्रोजेक्ट के पीछे की दृष्टि है।

टेलर हार्टले वॉशिंगटन, डी.सी. स्थित 9Marks में संपादकीय निदेशक के रूप में सेवा करते हैं। वे अपनी पत्नी रैचेल (Rachel) के साथ विवाहित हैं और उनके एक पुत्र हैं, जिनका नाम बोदे (Bode) है। टेलर ने साउदर्न बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी से एम.डिवि. (M.Div.) की उपाधि प्राप्त की है और वर्तमान में यूनाइटेड किंगडम के लंदन सेमिनरी में थ.एम. (Th.M.) की पढ़ाई कर रहे हैं।

